सभी धर्म समान

(संस्मरण)

7

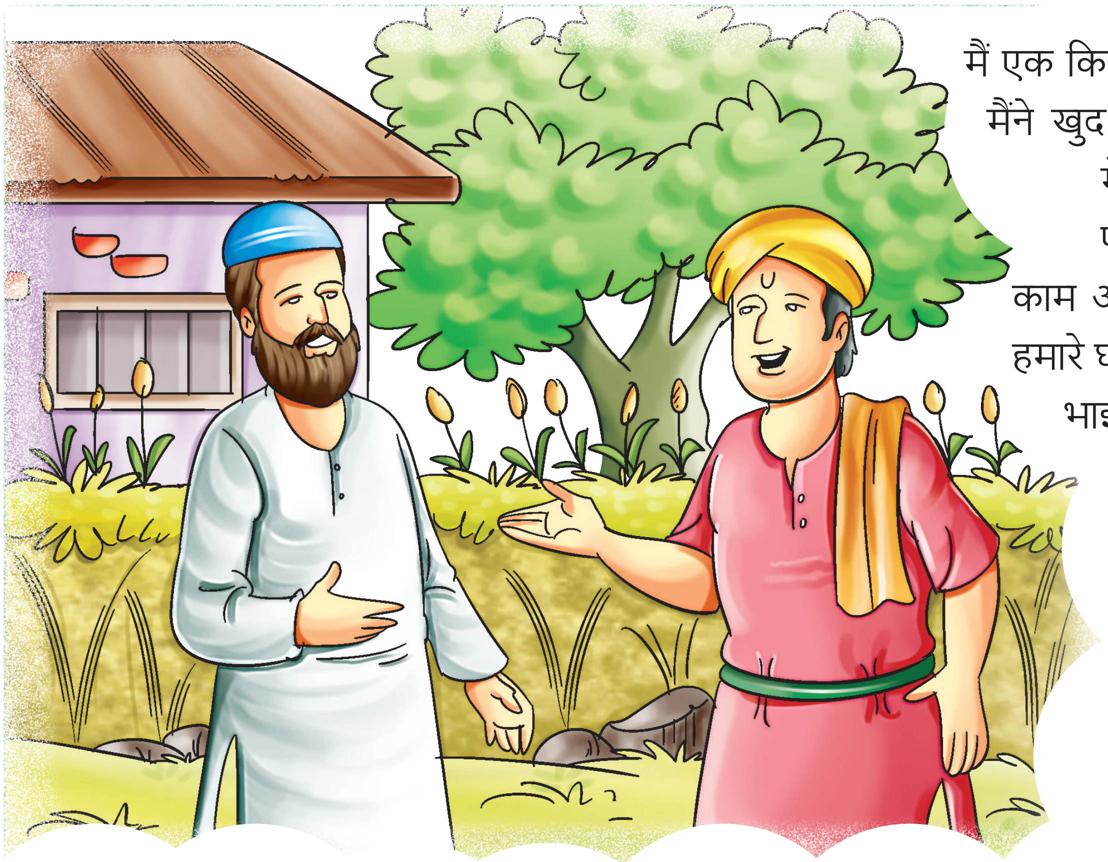

मैं एक किसान का लड़का हूँ, मगर मैंने खुद कभी हल नहीं चलाया। मेरे पिता संस्कृत के बड़े पंडित थे और खेती का काम अच्छी तरह से जानते थे। हमारे घर के पास एक मुसलमान भाई रहते थे। उनका नाम इब्राहीम था। वह जाति से जुलाहे थे, पर खेती से अपना गुजारा करते थे। हमारे और उनके खेत पास-पास थे। इसकी *वजह* से उनके साथ हमारा अच्छा मेल-जोल हो गया था। मेरे पिता उनको अपने भाई की तरह मानते थे। हम सब उन्हें इब्राहीम चाचा कहते थे।

इब्राहीम चाचा हमारे साथ अपने बच्चों जैसा *बर्ताव* करते थे। वे एक नेक मुसलमान थे और हमारी धार्मिक बातों का हमसे ज्यादा ख्याल रखते थे। उनका मानना था कि हर एक आदमी को अपने धर्म पर चलने का पूरा *हक* है। अकसर फसल के दिनों में मेरे पिता और इब्राहीम चाचा दोनों बारी-बारी से फसल की रखवाली करते और इस तरह पैसा और *वक्त* दोनों बचा लिया करते।

जब कभी हम अपने खेतों पर जाते, तो दूर से ही चिल्लाकर पुकारते– "इब्राहीम चाचा! कैसे हो? सो रहे हो या जाग रहे हो?" वे खेत में से जवाब देते– "आओ बेटा, आओ! आज मैंने बहुत अच्छी-अच्छी ककड़ियाँ और मीठे-मीठे खरबूजे तोड़े हैं। आओ, ये ले जाओ।" और वे हमारी झोलियाँ भर देते। मेरे पिताजी भी अपने खेत के अच्छे-से-अच्छे खरबूजे तुड़वाकर चाचा के घर भिजवाते। हम कभी इब्राहीम चाचा के हाथ का छुआ न खाते, न चाचा हमें कभी भूले-चूके भी खाने देते। फिर भी हम में किसी को भी यह ख्याल न आता कि हम हिंदू हैं और वे मुसलमान।

हम चार भाई थे। मैं सबसे छोटा था। इसीलिए इब्राहीम चाचा मुझे अधिक प्यार करते थे। आम के मौसम में टपके का सबसे पहला आम इब्राहीम चाचा खुद उतारते, बहुत *हिफाजत* के साथ कपड़े में लपेटकर लाते और चुपचाप मेरी जेब में डाल देते। मैं उसे सूँघता और उसकी मीठी 'खुशबू' में मस्त होकर मारे खुशी से बोल उठता– "चाचा, आप तो इस आम से भी ज्यादा मीठे हैं।"

चाचा को गुड़ बहुत पसंद था और उनकी बोली भी बहुत मीठी थी। इसीलिए हम सब हँसी में उन्हें मीठे चाचा कहते थे। यह सुनकर वे चिढ़ते और हमें मारने दौड़ते। हम भाग जाते और कभी उनके हाथ न आते।

अकसर इब्राहीम चाचा अपनी रकाबी में रोटी रखकर हमारे घर आते और मुझे आवाज देकर कहते– "बेटा, जरा देखो तो तुम्हारे घर में कोई साग-तरकारी बनी है?" मैं दौड़ा-दौड़ा माँ के पास जाता और तरकारी, अचार तथा दूसरी अच्छी-अच्छी खाने की चीजें थाली में ले आता और उनकी रकाबी में रख देता। चाचा वहीं बैठकर बड़े मजे से खाते। उन्हें परोसी हुई चीजें खत्म भी न होने पातीं कि मैं और ले आता तथा उनके मना करने पर भी रकाबी में परोस देता। मेरे इस बर्ताव से अकसर उनकी आँखों में *मुहब्बत* के आँसू छलछला आते। वे बहुत चाहते कि मुझे अपनी छाती से लगा लें, मगर कभी न लगाते। शायद इसीलिए कि मैं पंडित का लड़का था और वे मुसलमान थे।

इस प्रकार मेल-मुहब्बत में कई साल बीत गए और दोनों परिवारों में आपसी मुहब्बत बढ़ती गई। इस बीच मेरे पिताजी *गुजर गए*। अब तो इब्राहीम चाचा हमें पहले से भी ज्यादा प्यार करने लगे। मेरे बड़े भाई हमेशा उनकी सलाह से काम करते और चाचा भी उन्हें सच्ची व सही सलाह देते।

एक बार का किस्सा है– हिंदुओं की कुछ गायें और भैंसें चरवाहों की लापरवाही से मुसलमानों के कब्रिस्तान में घुस गईं। बहुत-से नए पेड़-पौधे चर

गईं। मुसलमानों को यह बात बहुत बुरी मालूम हुई। गाँव के मुसलमानों ने चरवाहों की खासी *मरम्मत कर दी* और जानवरों को *काँजीहौस* ले जाने लगे। चरवाहों ने यह खबर गाँव में पहुँचाई। जानवरों के मालिक अपनी लाठियाँ संभालकर मौके पर पहुँच गए। बात बिजली की तरह सारे गाँव में फैल गई और आस-पास के तमाम हिंदू और मुसलमान एक-दूसरे से लड़ने के लिए मैदान में जमा होने लगे। घंटों तू-तू, मैं-मैं होती रही और लाठियाँ चलने की पूरी तैयारी हो गई। समझौते की सब कोशिशें बेकार साबित हुईं, मुसलमानों ने कहा– "चरवाहों के लड़के हमेशा ऐसा करते हैं।" उन्होंने लाठी, पत्थर, ईंट जो भी चीजें मिलीं, जमा कर लीं। वे लड़ने और मरने-मारने पर तुल गए।

इब्राहीम चाचा भी अपने बेटों और पोतों के साथ मौजूद थे। उन्होंने झगड़ा निपटाने की बहुत कोशिश की, मगर किसी ने एक न सुनी। उन मवेशियों में हमारे मवेशी भी थे, इसलिए मेरे भाई भी वहाँ पहुँच गए थे। औरतों और बच्चों को छोड़कर सारा गाँव जमा हो गया था। औरतें बेचारी हैरान थीं और सोचती थीं कि मर्दों का क्या होगा ?

मैं मदरसे से आया, तो देखा, घर के सब दरवाजे और खिड़कियाँ बंद थीं। मुझे भी झगड़े का पता चल गया। मैंने किताबें एक कोने में पटकीं। माँ मना करती रही, मगर मैं मैदान की तरफ चल दिया और तेजी से उस जगह पहुँच गया, जहाँ लोगों की भीड़ थी। देखा, तो मालूम हुआ कि इब्राहीम चाचा अपने बेटों और पोतों के साथ सामने वाले *दल* में सबसे आगे खड़े हैं। मैंने उनसे पूछा– "इब्राहीम चाचा, आप किस तरफ हैं?"

इब्राहीम चाचा ने फौरन अपने बेटे के हाथ से लाठी छीन ली और वे मेरे पास आ खड़े हुए। उन्होंने अपने बेटों से कहा–"इसका बाप जिंदा नहीं है। इसलिए मैं इसके साथ रहकर लड़ूँगा। तुम उस तरफ रहो।"

इब्राहीम चाचा को दूसरी तरफ जाता देखकर सब दंग रह गए। कुछ देर तक वहाँ सन्नाटा छाया रहा। सब शर्मिंदा हो गए और बिना कुछ बोले अपने-अपने घरों की ओर चल पड़े। इब्राहीम चाचा के साथ-साथ हम भी अपने घरों को लौट गए।

उस दिन तो मैं समझ ही न पाया था कि इतना बड़ा झगड़ा एकदम क्यों ठंडा पड़ गया? लेकिन आज समझता हूँ।

इब्राहीम चाचा अब इस दुनिया में नहीं रहे, लेकिन मैं उन्हें कभी न भूलूँगा। मैं उनकी कब्र को अच्छी तरह जानता हूँ, उसे देखकर मैंने कई बार आँसू बहाए हैं। जब कभी कब्रिस्तान की ओर से निकलता हूँ, तो उनकी कब्र को देखकर बच्चों की तरह बरबस यह पूछ बैठता हूँ–"इब्राहीम चाचा, सोते हो या जागते हो?" मैं मान ही नहीं सकता कि वे सोते हैं– वे तो जागते हुए ही सोते हैं।

–महादेव देसाई

शब्द-अर्थ

वजह — कारण *(reason)*, हक — अधिकार *(right)*, हिफाजत — सुरक्षा *(security)*, गुजरना — मर जाना *(to die)*, काँजीहौस — जहाँ आवारा पशुओं को रखा जाता है *(jail of animals a type of bowl)*, बर्ताव — व्यवहार *(behaviour)*, वक्त — समय *(time)*, मुहब्बत — प्यार *(love)*, मरम्मत करना — पिटाई करना *(beat)*, दल — समूह *(group)*।

अभ्यास

मौखिक

1. इन शब्दों को पढ़कर सुनाइए–

पंडित	इब्राहीम	बर्ताव	हिफाजत	मुहब्बत
कब्रिस्तान	काँजीहौस	रकाबी	लाठियाँ	शर्मिंदा

2. निम्नलिखित प्रश्नों के मौखिक उत्तर दीजिए–

(क) परिवार के बाहर के किसी ऐसे व्यक्ति के बारे में बताइए, जो आपको बहुत प्यार करता है।

(ख) क्या हमें जाति व धर्म के नाम पर अपने संबंधों को तोड़ देना चाहिए?

(ग) अपने पिताजी के बारे में बताइए।

लिखित

1. सही उत्तर पर (✓) का निशान लगाइए–

(क) लेखक के पिता किसके बड़े पंडित थे?

☐ हिंदी के ☐ अंग्रेजी के ☐ संस्कृत के

(ख) इब्राहीम चाचा किसमें रोटी रखकर लाते थे?

☐ रकाबी में ☐ थाली में ☐ प्लेट में

(ग) मुसलमान लोग जानवरों को ले जाने लगे–

☐ चिड़ियाघर ☐ अपने घर ☐ काँजीहौस

2. वाक्यों को पूरा कीजिए–

(क) लेखक के पिता .... के बड़े पंडित थे।

(ख) हर एक आदमी को अपने .... पर चलने का पूरा हक है।

(ग) हम कभी इब्राहीम चाचा के हाथ का .... न खाते।

(घ) चाचा, आप तो इस आम से भी ज्यादा .... हैं।

3. सही वाक्यों के सामने (✓) तथा गलत वाक्यों के सामने (✗) का निशान लगाइए–

(क) लेखक किसान का लड़का है, पर हल चलाना नहीं जानता। ☐

(ख) इब्राहीम चाचा हमारे साथ सौतेला बर्ताव करते थे। ☐

(ग) आम चाचा खुद उतारते थे और बहुत हिफाजत के साथ कपड़े में लपेटकर लाते थे। ☐

(घ) मुसलमानों की कुछ गायें और भैंसें चरवाहों की लापरवाही से मंदिर में घुस गईं। ☐

4. शब्दों को उनके अर्थों से मिलाइए–

शब्द		अर्थ
(क) वजह	(i)	समय
(ख) बर्ताव	(ii)	सुरक्षा
(ग) वक्त	(iii)	अधिकार
(घ) हिफाजत	(iv)	व्यवहार
(ङ) हक	(v)	कारण

5. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) इब्राहीम चाचा लेखक के परिवार के साथ कैसा व्यवहार करते थे?

(ख) इब्राहीम 'मीठे चाचा' क्यों कहलाते थे?

(ग) लेखक इब्राहीम चाचा को किस प्रकार खाना खिलाते थे?

(घ) हिंदू और मुसलमानों के बीच किस बात पर झगड़ा हुआ?

भाषा-ज्ञान

1. निम्नलिखित मुहावरों का अर्थ लिखते हुए इनका वाक्यों में प्रयोग कीजिए–

	अर्थ	वाक्य-प्रयोग
(क) मरम्मत करना	....	....
(ख) तू-तू, मैं-मैं होना	....	....
(ग) दुनिया में न रहना	....	....

2. साग-सब्जी का अर्थ है, साग और सब्जी। इसी तरह के छः अन्य शब्द लिखिए–

....

....

3. दिए गए शब्दों का उनके समानार्थी शब्दों से रेखा खींचकर सुमेल कीजिए–

(क) लोभ	(i) रुकावट
(ख) सम्मान	(ii) आजाद
(ग) बाधा	(iii) लालच
(घ) सर्वोपरि	(iv) आदर
(ङ) स्वतंत्र	(v) सर्वोच्च

क्रियात्मक गतिविधि

- कहानी में लेखक कहता है कि हिंदू और मुसलमानों का झगड़ा एकदम क्यों शांत हो गया, यह मैं तब नहीं समझा था, किंतु आज समझता हूँ। क्या आप झगड़ा शांत होने का कारण समझते हैं? यदि हाँ, तो लिखिए–

....

....

....

....

- हिंदू-मुस्लिम एकता के लिए सुंदर अक्षरों में एक नारा लिखिए–

तंत्र–मंत्र

केवल पठन हेतु

बहुत दिनों की बात है। एक राजा के राज्य में एक गृहस्थ के घर लड़के का जन्म हुआ। माँ-बाप ने उसका नाम 'कुमार' रखा। कुमार के बड़े होने पर उसके माता-पिता ने उसका विवाह एक गृहस्थ की लड़की से कर दिया। कुछ दिन बाद उसके लड़के-लड़कियाँ भी हुईं। फिर उनमें से प्रत्येक एक-एक गृहस्थ हो गया।

कुमार बड़ा अच्छा आदमी था। कभी जीव-हत्या नहीं करता था, दूसरों की चीज न लेता, न कभी झूठ बोलता, कोई नशा न करता और दूसरों की स्त्री को माँ के समान समझता था।

कुमार जिस गाँव में रहता था, वह एक बहुत छोटा गाँव था। उसमें केवल तीस गृहस्थों के घर थे। एक दिन तीसों घरों के गृहस्थों को एक काम से एक स्थान पर मिलना था, पर गाँव में कोई भी ऐसा स्थान नहीं था जहाँ सभी एकत्र हो सकें। कुमार भी उन तीसों में से एक था। सबके साथ पहुँचकर उसने एक स्थान की धूल मिट्टी हटाकर वहाँ साफ कर दिया। उस स्थान के साफ होते ही एक आदमी वहाँ आकर खड़ा हो गया। कुमार उससे कुछ न कहकर दूसरी जगह साफ करने लगा। इसके साफ होने पर एक तीसरा आदमी आ धमका। इस तरह एक-एक स्थान साफ करते हुए सबके लिए स्थान बन गया। बाद में सबने मिलकर वहाँ एक चबूतरा तैयार किया। वे वहाँ यथासमय आते, उठते-बैठते और आमोद-प्रमोद करते।

कुछ दिन बाद वहीं पर उन्होंने एक छोटा-सा घर बना लिया और धीरे-धीरे चटाई आदि . जरूरी चीजों का संग्रह कर लिया। इस तरह वे वहाँ समय-समय पर आते और आमोद-प्रमोद करते।

सुबह जल्दी उठकर वे अपने-अपने घर के काम-काज कर लेते। फिर अपना-अपना हँसिआ, कुदाल लेकर घर से बाहर होते और चौरास्ते पर या और कहीं, अगर पत्थर होता तो हटा देते। ऊँची-नीची जगहों को समान कर देते।

जरूरत होने पर पुल बाँध देते, तालाब खोद लेते और जिससे जो हो सकता था, वह करते थे। कुमार के इस गुण से गाँव के सभी लोग खुश थे।

दिन बीतने लगे। इधर गाँव के मुखिया ने सोचा, "बात क्या है? पहले तो गाँव वाले बदमाशी करते थे, उनकी शराब पीने की आदत से हमारी आमदनी भी हो जाती थी। पीकर वे अंट-शंट बात करते थे और उन पर जुर्माना करने पर भी कुछ आमदनी हो जाती थी। पर इस कुमार ने गाँव वालों को ऐसा बदल दिया कि ये न शराब पीते हैं और न ही किसी तरह की हिंसा करते हैं। सभी भलेमानस हो गए हैं। अच्छा ठहरो। राजा के पास शिकायत करके देखता हूँ कि ये कैसे भलेमानस हैं?"

मुखिया राजा के पास जाकर बोला, "महाराज, गाँव के सभी लोग चोर हो गए हैं। उनका उपद्रव बढ़ गया है। कुछ उपाय कीजिए, नहीं तो बचना मुश्किल है।"

राजा ने हुक्म दिया, "जाओ, चोरों को हाजिर करो।"

मुखिया ने सबको बाँधकर हाजिर किया। राजा ने उनमें से किसी से बिना कुछ पूछे कहा– "इन्हें तुरंत हाथी के पैर से कुचलकर मार डाला जाए।"

राजमहल के लंबे-चौड़े मैदान में उन्हें बाँधकर लिटा दिया गया। एक बड़ा हाथी लाया गया।

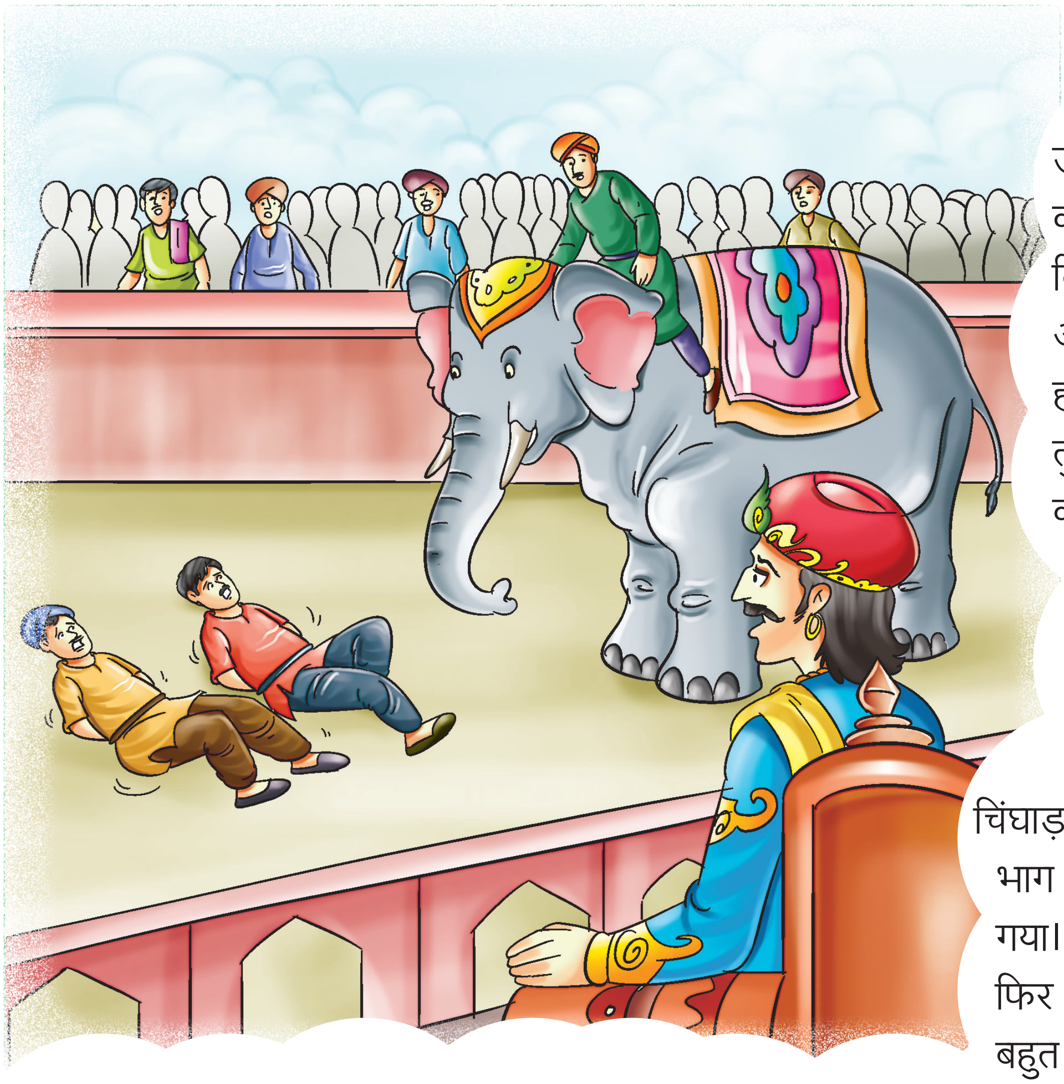

उन आदमियों में से एक कुमार भी था। उसने उन सबको पुकारकर कहा–"भाई, यह ठीक है कि राजा अन्याय कर रहे हैं और यह भी सच है कि हाथी हम को मार डालेगा– पर तुम लोग राजा पर क्रोध न करना।"

राजा के आदमियों ने हाथी को ऐसे चलाया कि वह इन लोगों को कुचल दे। पर वह आगे न जा सका। चिंघाड़कर पीछे लौट आया और भाग चला। दूसरा हाथी मँगवाया गया। वह भी आगे न बढ़ सका। फिर तीसरा, चौथा.... इस तरह बहुत सारे हाथी बुलाए गए। पर एक भी आगे नहीं बढ़ सका। सभी पीछे लौटकर भाग गए।

राजा ने कहा, "जान पड़ता है, इनके हाथ में कोई हवा है। अच्छा, इनके हाथ खुलवाकर देखो।"

राजा के आदमियों ने खूब ढूँढा, पर कुछ नहीं मिला। उन्होंने कहा, "महाराज, इनके हाथ में कुछ नहीं है।"

राजा ने कहा, "जान पड़ता है, ये कुछ तंत्र-मंत्र जानते हैं।" उन्होंने खुद पूछा, "क्यों जी, तुम लोग क्या कोई तंत्र-मंत्र जानते हो?"

कुमार ने कहा, "महाराज, हम लोग कोई तंत्र-मंत्र नहीं जानते। हम तीसों आदमी जीव हिंसा नहीं करते, दूसरे की चीज नहीं लेते, झूठ कभी नहीं बोलते और शराब भी नहीं पीते, सबको मित्र समझते हैं, जो हो सकता है सो दान कर देते हैं महाराज, अगर हम कोई तंत्र-मंत्र जानते हैं तो बस यही"। राजा उनकी बातें सुनकर बड़े खुश हुए। मुखिया की संपत्ति जब्त कर ली गई और उन लोगों को उनका गाँव और एक बड़ा हाथी दे दिया गया।"

–आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी